



पायनियर हलचल...

फंस गया दक्षिण?

आखिरी आखिरी रायपुर नगर दक्षिण का उच्चावाक काफी रोमांचक हो गया। मरदान सम्पन्न होने के बाद यह कहा जाने लगा है कि रायपुर दक्षिण का उपचुनाव फंस गया है। वहीं जैसे साल हुए विधानसभा चुनाव की अपेक्षा इस उप-चुनाव में मरदान प्रतिशत में तकरीबन 11 फीसदी की भारी गिरावट दर्ज की गई है, जिसके कारण उपचुनाव में पेंच फसने की बात से इनकार भी नहीं किया जा सकता। वोटिंग प्रतिशत कम होने की बजाए से रायपुर नगर दक्षिण उपचुनाव के परिणाम भी चौकाने वाले हो सकते हैं। हालांकि अभी तक ज्यादातर उपचुनावों में सत्ताधारी दल को विजयश्री मिलते रहे हैं। 2008 से लेकर अब तक के विधानसभा चुनाव की बात की जाए तो अब तक कांग्रेस के कहाँवाल अग्रवाल और भाजपा के बृजमोहन अग्रवाल के बीच सबसे कड़ा मुकाबला रहा, आकड़े भी इस पर मुहर लगाते दिख रहे हैं। कांग्रेस के कन्हैया अग्रवाल को 60093 वोट मिले थे। जबकि अन्य वर्ष हुए विधान सभा चुनावों में रायपुर प्रधानी 50 हजार मतों का आकड़ा पार नहीं कर पाये। हीं दूसरे पहलू की बात की जाए तो अब तक कांग्रेस प्रत्याधी महंत राम सुरदास की हार सबसे ज्यादा मतों से हुई। उस स्थिति में भी कांग्रेस 40 हजार वोट के आकड़े को पार कर गई, महंत राम सुरदास को 41500 वोट मिले। कहाँवाल का आपाव यह है कि रायपुर नगर दक्षिण में तकरीबन 40 हजार वोट कांग्रेस के फिक्स नजर आ रहे हैं। वहीं 35 साल बाद भाजपा की ओर से बृजमोहन अग्रवाल की जगह यहां से अन्य प्रत्याधी सुनील सोनी मैदान में हैं। यह बात अलग है कि बृजमोहन अग्रवाल ने खुले मंच से कहा कि चुनाव सुनील सोनी नहीं बल्कि मैं लड़ रहा हूं। बहरहाल जनता ने बृजमोहन की बात पर कितना अमल किया है, यह तो अब चुनाव परिणाम सामने आने के बाद ही स्पष्ट हो सकता।

वीएन अम्बाडे, हीं श्रीनिवास राव या फिर और कोई?

राज्य के बन बल प्रमुख की श्रीनिवास राव ने सेंट्रल में डीजी फारेस्ट के लिए अप्लाई किए हैं। वहीं मध्यांदेस से दीनियर आईएफएस वीएन अम्बाडे भी इस रेस में शामिल हैं। 1988 बैच के अफसर वीएन अम्बाडे भी काफी जार रहा है। दरअसल वीएन अम्बाडे 30 साल तक मिनिस्टरी में रह चुके हैं। वह नागपुर जन में लेब सम्पर्क तक सेवावंत देते रहे हैं। इसके साथ ही अम्बाडे 1988 बैच के अफसर हैं, जबकि वींशी अन्निवास राव 1990 बैच के अफसर हैं। वहीं दोनों अफसरों की उम्र में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है, दोनों का वर्ष 1966 है। ऐसे में अम्बाडे को सीनियरिटी और सेन्ट्रल मिनिस्टरी में काम करने के अनुभव का लाभ मिल सकता है। हालांकि छत्तीसगढ़ के बन बल प्रमुख वींशी अन्निवास राव वींशी पूरी तकत लगा रहे हैं। वींशी अन्निवास राव की दिल्ली कड़क का मजबूत है, इसके साथ ही संपर्क के एक बड़े पाराधिकारी का भी पूरा साथ राव को मिल रहा है। बहरहाल डीजी फारेस्ट के रेस वींशी अन्निवास राव जीने में सफल होते हैं, या फिर वीएन अम्बाडे को मौका मिलता है या बाजी और कोई मार ले जाएगा फिलहाल कुछ कहा नहीं जा सकता।

जनता के बीच मुख्यमंत्री छवि

सरकार के 11 माह बीते ही राज्य के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की लोकप्रियता आम जन के बीच बढ़ने लगी है। दरअसल कुछ माह पहले विष्णु सरकार के लिए यह धारणा बनना शुरू हो गई थी कि राज्य सरकार स्तो चल रही है, विष्णु भी इस बात को जनता के बीच जोर-शोर से प्रचारित करना शुरू कर दिया था। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री और सरकार की छवि में अचानक परिवर्तन दिखने लगा है, जिसके जनता के साथ-साथ अपरसाधी भी मृशस कर रही है। पिछले एक माह में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे थे, अब वह भी दोनों तरफ तले ऊंचाई बाजार शुरू कर दिए हैं। निश्चित ही मुख्यमंत्री और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच साबित हो रही है।

सत्राटा क्यों है भाई?

रायपुर दक्षिण उपचुनाव के परिणाम आते ही मंत्रीमंडल विस्तार के संकेत मिल रहे हैं। लेकिन मंत्री पद की लालसा रखने वाले नेताओं के बीच सत्राटा परस्या हुआ है। कहा जा रहा है कि रायपुर सम्पाद्य से एक विधायक को जगह मिलने जा रही है, वहीं दुर्ग सम्पाद्य के भी एक विधायक दल को जगह मिलते रहे हैं। विष्णु सरकार में रहते रहे हैं। विष्णु सरकार में रहते रहे हैं। एसे में अम्बाडे को मिनिस्टरी में रह चुके हैं। दरअसल वीएन अम्बाडे भी इस रेस में शामिल हैं। 1988 बैच के अफसर वीएन अम्बाडे भी काफी जार रहा है। लेकिन एक माह के अंतराल में अम्बाडे को सीनियरिटी और सेन्ट्रल मिनिस्टरी में काम करने के अनुभव का लाभ मिल सकता है। हालांकि छत्तीसगढ़ के बन बल प्रमुख वींशी अन्निवास राव 1990 बैच के अफसर हैं। वहीं दोनों अफसरों की उम्र में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है, दोनों का वर्ष 1966 है। ऐसे में अम्बाडे को सीनियरिटी और सेन्ट्रल मिनिस्टरी में रह चुके हैं। इसके साथ ही संपर्क के एक बड़े पाराधिकारी का भी पूरा साथ राव को मिल रहा है। बहरहाल डीजी फारेस्ट के रेस वींशी अन्निवास राव जीने में सफल होते हैं, या फिर वीएन अम्बाडे को मौका मिलता है या बाजी और कोई मार ले जाएगा। फिलहाल कुछ कहा नहीं जा सकता।

महिलाओं के बाद किसानों के बीच सरकार की पैठ

कांग्रेस की सरकार रहते हुए तकालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल किसानों के बीच काफी लोकप्रियता आम जन के बीच बढ़ने लगी है। दरअसल कुछ माह पहले विष्णु सरकार के लिए यह धारणा बनना शुरू हो गई थी कि राज्य सरकार स्तो चल रही है, विष्णु भी इस बात को जनता के बीच जोर-शोर से प्रचारित करना शुरू कर दिया था। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री और सरकार की छवि में अचानक परिवर्तन दिखने लगा है, जिसके जनता के साथ-साथ अपरसाधी भी मृशस कर रहे हैं। पिछले एक माह में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में अम्बाडे को सीनियरिटी और सेन्ट्रल मिनिस्टरी में रह चुके हैं। दरअसल भूपेश बघेल और अपरसाधी भी मृशस कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाकों के साथ-साथ मैदानी इलाकों में बदल जाता है। वहीं नहीं बदल जाता है, वो भी बिना किसी छिपाक के बाजार में वाहनों और अपरसाधी और उनके सचिवालय की राजनीत जनता और पार्टी के बीच कारबार के मूल्यांकन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन एक माह के अंतराल में मुख्यमंत्री की विश्वासनीय, लोकप्रियता का ग्राफ आईवासी इलाक